शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

कोरोना महामारी और विश्व नेतृत्व की विफलता

डॉ पुष्पेन्द्र दुबे

आज पूरा विश्व विगत 7-8 माह से कोरोना महामारी से जूझ रहा है। चीन के वुहान शहर से प्रारम्भ हुई इस महामारी की चपेट में दुनिया के अधिकांश देश आ गए हैं। जिन विकसित देशों को अपनी वैज्ञानिक क्षमताओं और तकनीक पर बहुत भरोसा था, वहां पर इस बीमारी से मरने वालों की संख्या सर्वाधिक है। विकासशील देश और अविकसित देशों में हालत बदतर है। वहां चिकित्सा का आधारभूत ढांचा ही उपलब्ध नहीं है। स्वयं को महाशक्ति के रूप में प्रचारित करने वाले देश और उनके नेतृत्वकर्ताओं ने इस महामारी को एक देश द्वारा छेड़ा गया युद्ध मना और इससे निपटने के लिए 'युद्ध' शब्द का ही जोर-शोर से इस्तेमाल किया। परिणामस्वरूप महामारी दूसरे स्थान पर चली गयी और पहले स्थान पर देश विशेष को रखकर योजनायें बनाई जाने लगीं। वास्तव में कोरोना महामारी भोगवादी संस्कृति के विस्तार का परिणाम है। इससे निपटने के लिए जो तरीके अपनाए जा रहे हैं, उनके मूल में भी शोषण की दृष्टि काम कर रही है। दुनिया के देश इस महामारी को समाप्त करने के लिए वेक्सीन बनाने में जुटे हुए हैं उनका उद्देश्य पीड़ित मानवता की भलाई तो बिलकुल नहीं है। वे वेक्सीन की खोज कर अधिक से अधिक मुनाफ़ा कमाना चाहते हैं। लगभग हर सप्ताह ऐसी सूचना आ जाती है कि कोई देश वेक्सीन बनाने के निकट पहुँच गया है ऐसा समाचार भी आ जाता है कि किसी कंपनी ने बाज़ार में कोरोना समाप्त करने वाली दवाई उतार दी है। एक ओर दुनिया के देशों के नेतृत्वकर्ता अपनी सत्ता बचाए रखने के लिए जनता को अनेक प्रकार के भ्रमजाल में उलझा रहे हैं। राष्ट्रवाद का अभिमान जाग्रत करने के लिए सामरिक और आर्थिक मोर्चे पर युद्ध की भाषा बोल रहे हैं। दूसरी ओर बाज़ार इस बीमारी को अपने लिए स्वर्णिम अवसर मानकर अकूत धन-संपत्ति हासिल करने की योजनायें बना रहा है। विज्ञान युग में राजनीतिज्ञों के हाथों में यह धरती बिलकुल भी सुरक्षित नहीं है। राजनीति के मूल में ही स्वार्थ भावना है। इसने दुनिया को खंडित करने, देशों के भीतर विभाजन करने, मनुष्य जीवन को खतरे में डालने के अतिरिक्त और कुछ नहीं किया है। प्रत्येक देश के नेतृत्वकर्ता ने धरती पर स्वर्ग उतारने के स्वप्न दिखाए, परन्तु विकास की गलत अवधारणाओं ने नरक जरूर उपस्थित कर दिया है। इसलिए अब इस धरती की सुरक्षा की जिम्मेदारी दुनिया के वैज्ञानिकों और आध्यात्मिकों को अपने हाथों में लेना चाहिए। पीड़ित मानवता के उद्धार का इसके सिवा ओर कोई रास्ता नजर नहीं आता। महर्षि अरविन्द की विश्व सरकार की अवधारणा को धरातल पर उतारने का यह उपयुक्त समय है। इसका नेतृत्व वैज्ञानिक और आध्यात्मिक व्यक्ति करेंगे। राष्ट्राभिमान को त्याग कर ही इस धरती का रक्षण किया जा सकता है। कोरोना महामारी को एक चेतावनी है। या तो मनुष्य स्वयं 'विश्वमानुष' होने का उद्घोष करे अथवा समाप्त होने के लिए तैयार रहे।